Vol-17, January-June 2023

ISSN No : 2278-0408

IIFS
IMPACT FACTOR
5.375

World Translation

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

Chief Editor

Prof. Ashok Singh
Vice Chancellor, Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja, Ambikapur, Chhattisgarh

Editor

Dr Surendra Pandey
Assistant Professor, Department of Hindi, Kooba P.G. College, Dariapur, Newada, Azamgarh

Dr Vikash Kumar
Assistant Professor, Department of Hindi, Shri Varshney College, Aligarh, U.P

Deputy Editor

Dr Ratnesh Kumar Tripathi
Assistant Professor, Department of History, Satyawati College, University of Delhi

Dr Santosh Bahadur Singh
Assistant Professor, Department of English Lady Irwin College, University of Delhi

Dr Ritu Varshney
Assistant Professor, Department of Hindi, Kirori Mal College, University of Delhi

Executive Editor

Dr Varsha Singh
Associate Professor
Department of English
Deshbandhu Collge, University of Delhi

Dr Seema Singh
Assistant Professor, Department of Hindi,
College of Vocational Studies,
University of Delhi

Dr Lal Singh
Assistant Professor, Department of Law,
Shri Varshney College, Aligarh

Sub Editor

Dr Rakesh Kumar
Assistant Professor,
Department of Physical Education,
Shri Varshney College, Aligarh

Dr. Umesh Kumar Rai
Assistant Professor, Department of Hindi
Veer Kunwar Singh University, Arrah, Bihar

Managing Editor

Dr Vinay Kumar Shukla
Associate Professor,
Govt. Ramanuj Pratap Singdev P.G. College
Koriya, Chattisgarh

Dr Arun Kumar Mishra
Assistant Professor, Department of Hindi,
M.D.P.G. College, Pratapgarh

Legal Advisor

Dr. Mukesh Kumar Malviya
Assistant Professor, Department of Law,
Kashi Hindu Vishwavidyalaya, Varanasi

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

WORLD TRANSLATION

....An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editorial Board

1. Prof. Anita Singh, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi.
2. Prof. Surendra Pratap, Department of Hindi, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi.
3. Prof. Vasisth Anoop, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
4. Prof. Champa Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
5. Prof. Gajendra Pathak, Department of Hindi, Hyderabad University, Hyderabad.
6. Prof. Mritunjay Singh, Shanti Prasad Jain College, Bihar.
7. Prof. S.R. Jaishree, Kerala University, Kerala.
8. Prof. Sunita Singh, Faculty of Education, Le Moyne College, South New York, US.
9. Prof. Manoj Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
10. Prof. Vinod Kumar Mishra, Department of Hindi, Central University, Tripura.
11. Prof. Satish Chandra Dubey, Department of Philosophy, Banaras Hindu University, Varanasi.
12. Prof. Umapati Dixit, Kendriye Hindi Sansthan, Agra.
13. Prof Prabhakar Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
14. Prof. Savitri Singh, Department of Sanskrit, Rohtas Mahila Mahavidyalaya, Sasaram, Bihar.
15. Prof. Devendra Pratap Singh, Kooba P.G. College, Dariapur, Nevada, Azamgarh.
16. Prof. Abhimanyu Yadav, Principal, Kooba P.G. College, Dariapur, Nevada, Azamgarh.
17. Dr Vikash Kumar Singh, Assistant Professor, AIHC & Archeology Department, Banaras Hindu University, Varanasi.
18. Dr Jitendra Kumar Singh, Associate Professor, Department of Hindi, Central University of Rajasthan, Rajasthan.

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

विषय-सूची
Contents

PART–I

1. उद्यमिता व उसकी आर्थिक विकास में भूमिका 3
—डॉ० पवन कुमार गुप्ता

2. क्रांतिकारी कर्तार सिंह सराभा : देशभक्ति पूर्ण कविताएँ 7
—डॉ० अरुण कुमार मिश्र

3. बच्चन सिंह की कथालोचना 14
*—*निशा सिंह, **डॉ० प्रतिमा सिंह*

4. कमलेश्वर के उपन्यासों में यथार्थ बोध 28
—प्रियंका सहाय

5. प्रगतिवादी-प्रयोगवादी गीत 37
—डॉ. आकाश वर्मा

6. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा 44
*—*डॉ. हेमलता सांगुड़ी, **शेर बहादुर*

7. दीनदयाल गिरि एवं गिरधर कविराय की लोकप्रियता के कारण 51
—डॉ० भारतेन्दु कुमार पाठक

8. सैदपुर तहसील (जनपद गाजीपुर) में कृषि जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण 54
—कमिन्दर

9. हिंदी कहानी और आदिवासी स्त्रियों की कथा-व्यथा 61
—बृजेश कुमार

10. हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना 69
—डॉ० विकास कुमार

11. भारतीय लोकतंत्र एवं रागदरबारी 75
—डॉ. विनय कुमार शुक्ला

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

भारतीय लोकतंत्र एवं रागदरबारी

डॉ. विनय कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव
स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर
कोरिया (छत्तीसगढ़)

सारांश

वर्तमान भारतीय साहित्यिक में 'रागदरबारी' जैसा उपन्यास किसी परिचय का मोहताज नहीं। 'रागदरबारी' के कथा-विन्यास में भारतीय समाज अपनी पूरी रंगत के साथ विद्यमान है। यहाँ एक ऐसा गाँव केन्द्र में है जो शहर से कुछ दूरी पर होने के बावजूद अपने समस्त गँजहेपन के साथ थिरक रहा है। जहाँ आजादी के बाद होने व पनपने वाली समस्त राजनैतिक और सामाजिक विद्रूपताएँ, बेलौस अंदाज, पारिवारिक संबंधों में आ रही दरार, व्यभिचार, कुविचार आदि पैबस्त है। यह उपन्यास अपनी कहन शैली के पैनेपन के चलते पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। साथ ही अपने साथ भारतीय गाँव के महासागर की यात्रा के लिए आमंत्रण देता है। यह उपन्यास गाँव की जिंदगी का वह दस्तावेज है जिसे अभी भी पढ़ा जाना बाकी है। जो हर बार एक नवीन पठनीयता की माँग करता है, इस माने में यह क्लॉसिक का दर्जा हासिल कर चुका है। बहरहाल, इस उपन्यास के केन्द्र में शिवपालगंज नामक गाँव है, जहाँ स्वतंत्रता बाद की विकास योजनाओं की धमक साफ-साफ देखी व सुनी जा सकती है।

वकौल हरीश नवल, साम्यवाद, गाँव-शहर का रिश्ता, जनता जनार्दन, नेतागिरी, सहकारिता, मैथेमेटिक्स, माला, हिन्दुस्तानी नियत, सिंबालिक मॉडर्नाईजेशन, धर्म की लड़ाई, वास्तविक दृश्य, डार्विन सिद्धांत, यूनियनबाजी, विरोधी से व्यवहार, सिनेमा का असर, वीर्य का महत्व, नशीले पदार्थ, गुप्त साहित्य, पीढ़ी-संघर्ष, विदेशी-प्रभाव, खेती पर लेक्चर, विज्ञापनबाजी, अंग्रेजी का जादू, सरकारी अनुदान, प्यार की फिलॉसफी, गुटबंदी, वेदांत-समीक्षा, इंसानियत का अर्थ, गाँधीगीरी का सच, गाँव-चुनाव की राजनीति, पद की मर्यादा के असली मायने और भी न जाने क्या-क्या समाजशास्त्रीय सूत्र व्याख्याएँ श्रीलालजी ने की हैं, जिनका हिंदी साहित्य में कोई सानी नहीं है।[1] ग्राम केन्द्रित उपन्यासों की परंपरा

में 'राग दरबारी' भारतीय ग्राम्य जीवन को रेखांकित करने वाला ऐतिहासिक पड़ाव है, जहाँ उत्तरोत्तर आ रही विकृति को देखा व महसूस किया जा सकता है। यहाँ शिवपालगंज में आजादी के इक्कीस वर्षों बाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के चिन्ह देखने को मिलते हैं पर हैं वे नाममात्र के ही, क्योंकि वे जनता के लिए कम, शासन से मिले अपने अधिकारों के द्वारा उनके शोषण के लिए अधिक सक्रिय हैं। शिवपालगंज में ग्राम-सभा, ग्राम-पंचायत, कोऑपरेटिव यूनियन इंटर कॉलेज आदि बहुत कुछ है पर गाँवों की वास्तविकता इन कायांतरणों के बावजूद मूलरूप से वहीं है जो 'गोदान' और 'मैला आँचल' के जमाने में थी। इस अर्थ में गाँव नहीं बदले हैं, उनका विकास नहीं हुआ है। उनकी जिंदगी मध्यकालीन की मध्यकालीन ही है। यद्यपि उसमें आधुनिकता का रंगरोगन और तड़का खूब लगाया गया है। तौर-तरीके बदल गए हैं पर दृष्टि वहीं की वहीं, बल्कि कहा जा सकता है कि और भी घातक हो गई है। भूमि समस्या, जातिगत-वैमनस्य, स्वार्थपरता और भाई-भतीजावाद, शोषण, कट्टर-संकीर्ण और रूढ़िग्रस्त जीवन-दृष्टि, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, मूल्यहीनता, अकर्मण्यता की समस्याएँ पहले से कुछ अधिक परिलक्षित होती है।[2] जहाँ धोखेबाजी, मक्कारी, अनैनिक संबंध जिसकी लाठी उसकी भैंस, धांधली, गाँव के दिन-पर-दिन पतन की ओर अग्रसर होने की गाथा कहते हैं।

इस उपन्यास के कथा केन्द्र में 'शिवपालगंज' है, जो न गाँव है न कोई कस्बा। यह गाँव और कस्बे के बीच स्फर करता गाँव है 'शिवपालगंज' का केन्द्र और घनीभूत होते हुए वाया कॉलेज वैद्य जी की बैठक में पैबस्त है। श्रीलालजी के अनुसार ईंट-गारा ढोनेवाले मजदूर भी जानता था कि बैठक का मतलब ईंट और गारे की बनी हुई ईमारत भर नहीं है। नं. 10 डाउनिंग स्ट्रीट, व्हाइट हाउस, क्रेमलिन आदि मकानों के के नहीं, ताकतों के नाम है।[3] यह दरबारे-आम समूचे गाँव में होने वाली हलचलों का केन्द्र है, जहाँ गँवई समाज की कलक-गाथा का नया महाराग दिखाई पड़ता है। वैद्य जी की इस बैठक में उनके वरदहस्त तले कॉलेज में गुटबंदी, राजनीति तथा कोऑपरेटिव यूनियन में गबन होता है। ग्राम-प्रधान भी इनका दरबारी है और इस दरबार में गीता, गाँधीवाद, धर्मयुद्ध, प्रेम,, अहिंसा, प्रजातंत्र, वीर्य रक्षा से संबंधित भाषण देकर आशा का संचार किया जाता है।[4] 'रागदरबारी' में वैद्यजी थे हैं और रहेंगे। अंग्रेजों के जमाने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभाने वाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने भी नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को संभालना पड़ा था।[5]

वैद्यजी शिवपालगंज के मुख्य कर्ता-धर्ता हैं। इस शिवपालगंज में एक कॉलेज है, छंगामल इंटर कॉलेज। रिश्वत, अंग्रेजी विज्ञापन, पुलिस की निष्क्रियता, आपराधिक प्रवृत्तियाँ, न्यायिक अव्यवस्था

आदि इस गाँव में किसी न किसी रूप में जुड़े हैं, जिनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सूत्रधार हैं वैद्यजी। इन वैद्य जी की गंवई राजनीति वेदान्त के आधुनिक भाष्य पर आधारित है जो उनकी खुद की जवाबदेही इस प्रकार तय करती है- "वेदान्त के अनुसार जिसका हवाला वैद्यजी आयुर्वेद के पर्याय के रूप में दिया करते थे- गुटबंदी परात्मानुभूति की चरम दशा का एक नाम है। उसमें प्रत्येक 'तू' 'मैं' को और प्रत्येक 'मैं' 'तू' को अपने से ज्यादा अच्छी स्थिति में देखता है। वह उस स्थिति को पकड़ना चाहता है। 'मैं' 'तू' को और 'तू' 'मैं' को मिटाकर 'मैं' की जगह 'तू' और 'तू' की जगह 'मैं' बन जाना चाहता है।[6] गाँवों में व्याप्त गुटबन्दी के चरम नमूने हैं वैद्यजी। जहाँ खुद की सत्ता कायम रखने के लिए जैसे भी हो विरोधी को चित्त करना परम आनंद की अनुभूति है। गाँव में पालक-बालकों की महत्ता और दबंगई का महात्म्य आज चरम पर है। उपन्यास में जहाँ रूप्पन बाबू को शिवपालगंज व्यक्तिगत कारणों से कूड़ा, नाबदान, नाली नजर आता है वहीं रंगनाथ को महाभारत की तरह सब कुछ को अपने में समेटने वाला नजर आता है। यानी जो यहाँ हैं वह सब जगह है और जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं है।

रागदरबारी में गाँव का आधार बनाकर स्वातंत्रयोत्तर भारतीय लोकतंत्र में व्यवस्था की सड़ांध, जनतांत्रिक मूल्यों का विघटन तथा नैतिक और समाजिक अध:पतन का सर्वनकारवादी विमर्श रचा गया है।[7] ग्रामीण जीवन की सभ्यता की परत-दर-परत उधेड़ने के क्रम में वह गाँव हमारे सामने रूबरू होता है जो लुट-पिट रहा है। पुलिस-व्यवस्था, न्याय प्रणाली, स्वास्थ्य व्यवस्था, विकास योजनाएं, नैतिक मूल्य, शिक्षा-प्रणाली, जाति व्यवस्था, राजनीति, भाईचारा, पत्रकारिता, सदभाव आदि सबके सब पतन की ओर अग्रसर हैं। यह हाल तब का है जब आजादी मिले जमा-जुमी बीस बरस ही हुए है। इतनी सीमित कालावधि में 'गोदान' और 'मैला आंचल' के गाँव को कोसो दूर झटकते हुए 'रागदरबारी' ग्रामीण समाज का नया आख्यान प्रस्तुत करता है। जहाँ जनता को जनता बनाए रखने हेतु तमाम दाँव-पेंच चलते रहते है। आजादी के बाद आम जन-मन में जो आशाएं-आकांक्षाएं थीं उनका विपर्यय हुआ। समाज में जो वर्चस्वशाली वर्ग था वह स्वतंत्र भारत में खुद का नया मुकाम बनाने के लिए जोड़-तोड़ में लग गया। फ़िर उन्हीं का आधिपत्य कायम हुआ। अपनी ताकत बनाये रखने के लिए यथास्थिति की तमाम नारों के वावजूद वचाये रखने की कोशिश बढ़ती ही गई। कभी-कभी लगता है कि 'रागदरबारी' में चित्रित समाज गँजहापन को मीलों पीछे छोड़ चुका है। पर आज भी हम गाँवों के पतन के जितने भी संस्थान, गढ़, क्रियाएं हैं उसके मूल तत्व 'रागदरबारी' में देख सकते हैं। गाँव बदले हैं जरूर, रहन-सहन में वदलाव आया है पर आपसी सद्भाव गन्दी राजनीति व स्वार्थ की भेंट चढ़ चुका है। वैद्यजी, सनीचर, वद्री पहलवान, छोटे पहलवान व जोगनाथ जैसे पात्रों की बाढ़ ऊपर से नीचे तक अपनी पूरी ताकत के साथ मौजूद है। तेजपाल चौधरी के अनुसार 'रागदरबारी' के लेखन का समय वह है जब राजनीति नीति का दामन छोड़कर सत्त की ओर मुड़ रही थी। अधिकतर नेता आजादी की लड़ाई में किए गए त्याग की कीमत ब्याज सहित वसूलने में लगे थे। सत्ता की इस दौड़ में ऐसे लोग भी शामिल हो गये

थे, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय संघर्ष में खलनायक की भूमिका निभाई थी।[8] इस परिवर्तन ने ग्रामीण राजनीति को भी गहराई तक प्रभावित किया। चूंकि गाँव ही इन नेताओं के असली वोट बैंक थे, अतः इनकी सूझबूझ से वहाँ छुटभैया नेताओं का एक ऐसा वर्ग उभरा जो अपने-अपने क्षेत्र के बेताज बादशाह थे। जिनके संरक्षण में गुंडागर्दी पनपती थी और जो पंचायतों पर कब्जा करके, सहकारी समितियों को हथियाकर, स्कूलों, कॉलेजों की मैनेजिंग कमेटियों पर अधिकार जमाकर अपना उल्लू सीधा करने में विश्वास रखते थे। 'रागदरबारी' ऐसी राजनीति का प्रामाणिक दस्तावेज है। इस प्रकार की राजनीति ने भारतीय गाँवों की सदियों-सदियों से चली आ रही सहकारिता व एक सूत्रता को खंडित कर दिया। स्वार्थ और फरेब की गँजहा प्रवृत्ति हजार-हजार बाहों वाली विषकन्या के रूप में ग्रामीण समाज को किस प्रकार विभिन्न कोणों से अपने आलिंगन पाश में जकड़ रही, 'रागदरबारी' इसका दस्तावेज है।

संदर्भ सूची

1. प्रेम जनमेजय (सं.) : श्रीलाल शुक्ल : विचार विश्लेषण एवं जीवन, पृ. 50
2. वही, पृ. 69
3. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, पृ. 29
4. डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र : श्रीलाल शुक्ल और रागदरबारी, पृ. 105
5. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी : पृ. 32
6. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी : पृ. 78
7. प्रेम जनमेजय (सं.) : श्रीलाल शुक्ल : विचार विश्लेषण एवं जीवन, पृ. 62
8. वही, पृ. 71